दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001

(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)

सम्बद्ध

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ & Fax : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : digvijayans@gmail.com
: dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

पत्रांक : /2018–19 दिनांक : 15.09.2018

समाचार स्वरूप प्रकाशनार्थ

हिन्दू धर्म की व्याख्या कभी भी मजहब या सम्प्रदाय के दृष्टिकोण से नही की जा सकती : प्रो. रामअचल सिंह

आज दिनांक 15 सितम्बर 2018 को दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय में युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यानमाला का शुभारम्भ हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. विनोद सोलंकी, (पूर्व अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर) ने सभा को संबोधित करते हुए बताया कि महन्त दिग्विजयनाथ जी ने अपने जीवन का लक्ष्य महाराणा प्रताप की परम्परा को निभाते हुए राष्ट्र चेतना को ही बनाया। राष्ट्र चेतना का मूल तत्व है अध्यात्म और अध्यात्म का मुख्य स्तम्भ है सत्य एवं प्रेम। डॉ. सोलंकी ने चैतन्य महाप्रभु के जीवन के एक उदाहरण द्वारा प्रेम के बारे में बताया तथा स्वामी विवेकानन्द जी के शिकागो सम्मेलन के उदाहरण से सत्य के स्वरूप को स्पष्ट किया। नाथ परम्परा के स्वामी गम्भीरनाथ जी के जीवन के उदाहरण से बताया कि किस प्रकार स्वामी जी योग द्वारा सूक्ष्म शरीर एवं स्थूल शरीर को अलग कर लेते थे। यही योग की शक्ति है और यही योग भारतीय संस्कृति का आधार है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए डॉ. अश्वनी कुमार मिश्र (क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी, गोरखपुर) ने कहा कि महंत दिग्विजयनाथ जी की जन्मभूमि भले ही गोरखपुर न रही हो परन्तु कर्मभूमि गोरखपुर ही रही। डॉ. मिश्र ने छात्रों को महंत जी के जीवन से शिक्षा लेने को कहा और बताया कि त्याग, लक्ष्य निर्धारण, राष्ट्र निर्माण, प्रकृति से तारतम्यता, सेवा भाव (राष्ट्र सेवा, मानव सेवा) समाज से भेदभाव मिटाना यह महन्त जी के जीवन के मुख्य लक्ष्य थे। नेतृत्व क्षमता के साथ ही क्षमादान का गुण भी महन्त जी के व्यक्तित्व मे था। राष्ट्रवाद, भारतीय संस्कृति की रक्षा एवं शिक्षा के विस्तार के लिए आप निरन्तर प्रयत्नशील रहे। पूर्वांचल में शिक्षा के विस्तार हेतु 1932 में आपने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना की जो आज लगभग 40 से भी ज्यादा शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान दे रही है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में प्रो. रामअचल सिंह जी (पूर्व कुलपति, राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद) ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्र को नष्ट करने के लिए सिर्फ उसके इतिहास उसकी संस्कृति को नष्ट करना पर्याप्त होता है। कुछ इसी प्रकार का प्रयास लार्ड. मैकाले ने भारतवर्ष को नष्ट करने के लिए किया एवं यहाँ की शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी को बना दिया। परन्तु हमारे युगद्रष्टा महंत दिग्विजयनाथ जी ने राष्ट्र की संस्कृति की रक्षा हेतु निरन्तर प्रयास किया एवं शिक्षा के विस्तार के लिए कई सारी शिक्षण संस्थाएँ प्रारम्भ की। डॉ. सिंह ने शिक्षक तथा छात्र दोनों के सम्बन्ध एवं उत्तरदायित्व के बारे में चर्चा की। पूज्यनीय दिग्विजयनाथ जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए प्रो. सिंह ने बताया कि महंत जी के जीवन का आधार हिन्दू धर्म था जो कि शाश्वत है। हिन्दू धर्म अलौकिक है, इसकी व्याख्या कभी भी मजहब या सम्प्रदाय के दृष्टिकोण से नही की जा सकती। प्रो. सिंह ने छात्रों एवं शिक्षकों को महंत जी के जीवन से शिक्षा लेने को कहा।

कार्यक्रम के अन्त में आभार ज्ञापन महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह द्वारा किया गया। संचालन डॉ. अर्चना सिंह, ऐशोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के समस्त शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

स्वर्ण जयन्ती वर्ष युगपुरूष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यान माला के अन्तर्गत **IFYP** एवं दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वाधान में **Yoga for Social Health** (सामाजिक स्वास्थ्य के लिए योग) विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी दिनांक 16.09.2018 दिन रविवार को आयोजित है।
कार्यक्रम स्थल – पुस्तकालय सभागार (दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर)।
दिनांक – 16.09.2018, समय – प्रातः 09.30 बजे।

डॉ. (शैलेन्द्र प्रातप सिंह)
प्राचार्य

युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति
व्याख्यान-माला

व्याख्यान-माला

व्याख्यान-माला

व्याख्यान-माला

युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति

व्याख्यान–माला

युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति
व्याख्यान–माला

व्याख्यान–माला
दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर